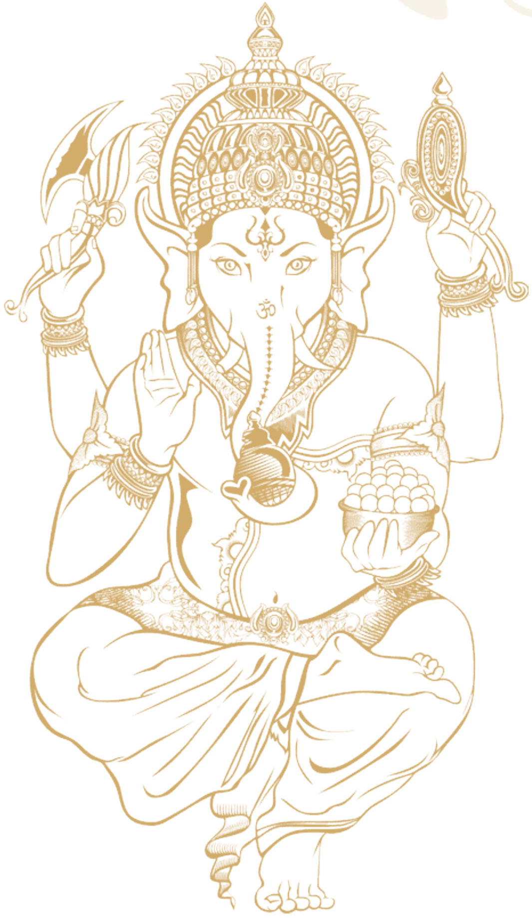

Manvik Ahluwalia

16 Dec 2025

10:23 AM

Muzaffarnagar

Model: Baby-Horoscope **Order No: 120835101**

तिथि 16/12/2025 **समय** 10:23:00 **वार** मंगलवार **स्थान** Muzaffarnagar **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:15
अक्षांश 29:28:00 उत्तर **रेखांश** 77:42:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:19:12 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल : 15:44:10 घं
वेलान्तर : 00:04:22 घं
सूर्योदय : 07:07:07 घं
सूर्यास्त : 17:22:48 घं
चैत्रादि संवत : 2082
शक संवत : 1947
मास : पौष
पक्ष : कृष्ण
तिथि : 12
नक्षत्र : स्वाति
योग : अतिगण्ड
करण : कौलव

अवकहड़ा चक्र

गण : देव
योनि : महिष
नाड़ी : अन्त्य
वर्ण : शूद्र
वश्य : मानव
वर्ग : सर्प
युँजा : मध्य
हंसक : वायु
जन्म नामाक्षर : ता-तरुण
पाया(रा.-न.) : ताम्र-रजत
होरा : बुध
चौघड़िया : चर

विंशोत्तरी

राहु 2वर्ष 6मा 4दि
राहु
16/12/2025
21/06/2028

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/12/2025
चन्द्र	03/06/2027
मंगल	21/06/2028

योगिनी

पिंगला 0वर्ष 3मा 10दि
पिंगला
16/12/2025
28/03/2026

	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	00/00/0000
	16/12/2025
संकटा	08/03/2026
मंगला	28/03/2026

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			19:36:43	मक	श्रवण	3	चंद्र	बुध	---	0:00			
सूर्य			00:15:24	धनु	मूल	1	केतु	केतु	मित्र राशि	1.18	कलत्र	पितृ	प्रत्यारि
चंद्र			18:08:20	तुला	स्वाति	4	राहु	चंद्र	सम राशि	1.06	भ्रातृ	मातृ	जन्म
मंगल		अ	06:26:58	धनु	मूल	2	केतु	राहु	मित्र राशि	1.19	पुत्र	भ्रातृ	प्रत्यारि
बुध			11:19:30	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	चंद्र	सम राशि	1.24	मातृ	ज्ञाति	विपत
गुरु	व		29:01:27	मिथु	पुनर्वसु	3	गुरु	सूर्य	शत्रु राशि	1.12	आत्मा	धन	सम्पत
शुक्र		अ	25:06:11	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	सम राशि	0.88	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि			01:13:41	मीन	पू०भाद्रपद	4	गुरु	मंगल	सम राशि	0.82	ज्ञाति	आयु	सम्पत
राहु	व		18:34:07	कुंभ	शतभिषा	4	राहु	चंद्र	मित्र राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		18:34:07	सिंह	पू०फाल्गुनी	2	शुक्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

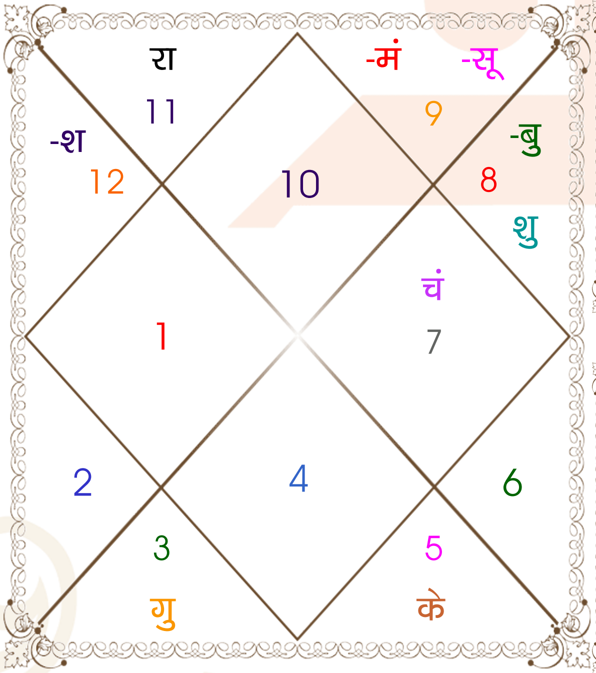

चन्द्र कुंडली

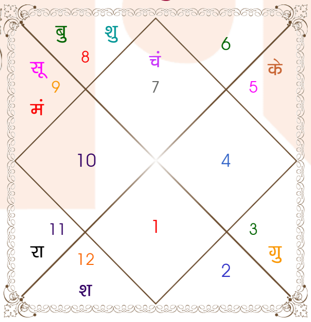

नवमांश कुंडली

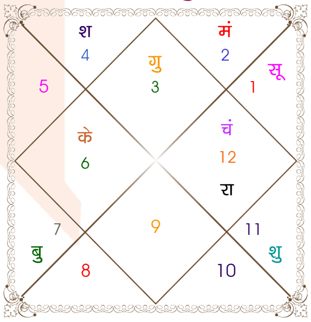

सर्वाष्टकवर्ग

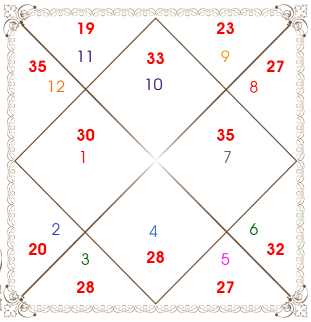

दशमांश कुंडली

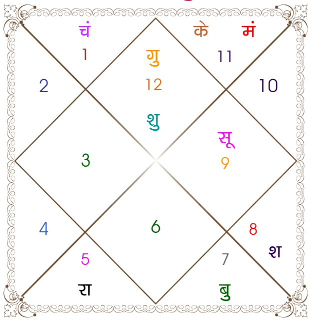

Acharya Ashok Shukla Vedpathi Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com

नक्षत्रफल

आपका जन्म स्वाती नक्षत्र के चतुर्थ चरण में हुआ हैं। अतः आपकी राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण शूद्र, योनि महिष, नाड़ी अन्त्य, गण देव तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर ”त” या ”ता” से प्रारम्भ होगा।

आप नैसर्गिक रूप से सहनशील रहेंगे तथा बड़े से बड़े कष्ट को भी सहन करने में समर्थ होंगे तथा अनावश्यक खुशी तथा दुःख का आप प्रदर्शन करने के लिए कभी भी उत्सुक नहीं रहेंगे। व्यापारिक कार्यो में आप अत्यन्त ही इच्छुक तथा चतुर रहेंगे तथा अपनी आजीविका यापन में इसे ही प्रधान रूप से अंगीकृत करेंगे। आपका मन दया एवं करूणा के भाव से सर्वथा ओत प्रोत रहेगा तथा दीन दुःखियो के प्रति पूर्ण रूप से आप दयालु रहेंगे। आप अपने सम्भाषण में हमेशा दूसरो के कर्ण प्रिय लगने वाली प्रिय एवं मधुर वाणी का ही उपयोग करेंगे जिससे आपसे सभी लोग प्रसन्न एवं प्रभावित रहेंगे। आपकी प्रकृति धार्मिकता से भी परिपूर्ण रहेगी तथा आप नियमपूर्वक धर्म का आजीवन पालन करेंगे।

दान्तो वणिक्कृपालु प्रियवाग्धर्माश्रितः स्वातौ।
बृहज्जातकम्

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक क्लेश सहिष्णु, व्यापारी, कृपाकारक, मधुर वाणी बोलने वाला और धर्माचरण में तत्पर होता है।

आप अपने जीवन में देवता तथा ब्राहमणों का प्रिय कार्य अर्थात धर्मानुपालन करने वाले होंगे तथा इनके प्रति अपने मन में असीम श्रद्धा का भाव प्रदर्शित करते रहेंगे। आप अपने जीवन काल में विभिन्न प्रकार के सुखैश्वर्य एवं वैभव का आनन्दपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे। आपके पास आर्थिक कमी कभी भी नहीं रहेगी। धनधान्य से आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी बुद्धि मध्यम श्रेणी की होगी तथा तीव्रता का इसमें सर्वदा अभाव दृष्टिगोचर होगा।

स्वात्यां देवमहीसुरप्रियकरो भोगी धनी मन्द धीः।
जातकपरिजातः

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवता और ब्राह्मणों का प्रिय करने वाला, भोगी, धनी, किन्तु मन्द बुद्धि से युक्त होता है।

आपका रूप देखने में अत्यन्त सुन्दर एवं आकर्षक रहेगा जिसे देखकर अन्य लोग सहज में ही आपसे प्रभावित रहेंगे। साथ ही मुखमंडल की तेजस्विता भी दर्शनीय रहेगी। आप अन्य जनों से भी मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध स्थापित करेंगे तथा उनके प्रिय एवं आदरणीय रहेंगे। इससे आपका हृदय सदैव प्रसन्नता से युक्त रहेगा। इसके अतिरिक्त आप राज्य या सरकार से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से धन की प्राप्ति करेंगे तथा जीवन में सहर्ष उसका उपभोग करेंगे।

कन्दर्परूपः प्रभयासमेतः कान्तापरप्रीति रतिप्रसन्नः।
स्वाती प्रसूतौ मनुजस्य यस्य महीपति प्राप्त विभूतियुक्तः।।
जातकाभरणम्

अर्थात स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक कामदेव के समान सुन्दर रूप वाला, अनेक स्त्रियों से प्रीति रखने वाला, प्रसन्नचित तथा राजा से धन प्राप्त करने वाला होता है।

आप विविध प्रकार के शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक प्रसिद्ध विद्वान के रूप में समाज में ख्याति प्राप्त करेंगे तथा धर्म का आप निष्ठापूर्वक पालन करेंगे। समाज की अन्य स्त्रियों के प्रति आपमें अनुराग का भाव रहेगा तथा उनके आप प्रिय भी रहेंगे परन्तु प्रकृति कंजूसी से परिपूर्ण रहेगी।

विदग्धो धार्मिकश्चैव कृपणः प्रियवल्लभः।
सुशीलो देवभक्तश्च स्वातौ जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

अर्थात् स्वाती नक्षत्र में उत्पन्न जातक विद्वान, धार्मिक, कृपण, अन्य स्त्रियों का प्रिय, सुशील एवं देवताओं का भक्त होता है।

ताम्र पाद में उत्पन्न होने के कारण आप राज्य या सरकार से धन लाभ अर्जित करने में हमेशा सफल रहेंगे तथा समाज में दूर दूर तक आपकी ख्याति व्याप्त रहेगी। देखने में आपका सौन्दर्य आकर्षक रहेगा। आप सन्तोषी प्रवृति के होंगे तथा अनावश्यक इच्छाओं को मन में उत्पन्न नहीं करेंगे। आप श्रेष्ठ आचरण से युक्त रहेंगे तथा सभी लोग आपका आदर सत्कार करेंगे। विविध प्रकार की धन सम्पतियों तथा सुखसंसाधनों से आप युक्त रहेंगे एवं जीवन में प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। माता पिता के प्रति आपकी पूर्ण श्रद्धा रहेगी तथा इनसे भी आप पूर्ण धन सम्पति को प्राप्त करेंगे। आप एक विद्वान पुरुष होंगे तथा ज्ञानार्जन में आपकी विशेष रूचि रहेगी। आप अपने द्वारा प्रारम्भ कार्यों में शीघ्र ही सफलता अर्जित करेंगे तथा नाना प्रकार के वाहन एवं भूमि से भी युक्त रहकर प्रसन्न रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में विशेष श्रद्धाभाव रहेगा। आप एक पराक्रमी पुरुष भी होंगे। आप में परोपकार की भावना भी रहेगी तथा सज्जन पुरुषों का आप नित्य आदर करेंगे। इसके अतिरिक्त आप में दानशीलता का भाव भी विद्यमान रहेगा।

तुला राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका शरीर तथा मुखमंडल देखने में सुन्दर होगा। आपकी आँखें बड़ी बड़ी होंगी तथा नासिका भी ऊँची उठी हुई रहेगी। नाना प्रकार के वाहन साधनों से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगे तथा जीवन में आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। समाज में आपके संबंध विस्तृत रहेंगे तथा इसी परिपेक्षण में स्त्री वर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ सम्बन्ध रहेंगे। आप वाहन तथा भूमि से युक्त होकर इनसे पर्याप्त लाभार्जन करेंगे। आपके पराक्रम का प्रभाव समाज में सभी लोग स्वीकार करेंगे। सभी लोग आपको यथोचित आदर तथा सम्मान प्रदान करेंगे। आप विविध प्रकार के ऐश्वर्य तथा धनवैभव से सुसम्पन्न

रहकर इसका उपभोग करेंगे। आप स्त्री से पूर्णरूपेण पराजित ही रहेंगे तथा अपने समस्त कार्यो को उसी के निर्देशानुसार सम्पन्न करेंगे। आप किसी भी कार्य को कुशलता से सम्पन्न करने में सर्वथा समर्थ रहेंगे। देवता एवं ब्राहमणों के आप प्रिय भक्त रहेंगे तथा श्रद्धापूर्वक इनकी पूजा तथा सेवा करेंगे। धनधान्यादि संग्रह करने की भी आप की प्रकृति रहेगी एवं बन्धु वर्ग से उपकार में आप हमेशा तल्लीन रहेंगे एवं उनकी भलाई के लिए कार्य करते रहेंगे।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विकमज्ञः कियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप समाज में देवता ब्राहमण एवं सज्जनों की पूजा तथा सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगे तथा विद्वता से सुशोभित रहकर पवित्र जीवन यापन करेंगे। आपके शरीर में सुगन्धि का वास रहेगा आप भ्रमण तथा यात्रादि करने में अपने अधिकाँश समय को व्यतीत करेंगे। आप कय विकय अर्थात व्यापारिक कार्यो में अत्यन्त प्रवीण रहेंगे। आप अपने बन्धुओं तथा सम्बन्धियों की यत्न पूर्वक भलाई तथा सहयोग करेंगे परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा। साथ ही धनधान्य से भी आप परिपूर्ण रहेंगे।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः कयविकयेषु कुशलो देवद्विनामा सरुक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य का गुण विद्यमान रहेगा एवं अपने समस्त कार्यों को आप धैर्यपूर्वक सम्पन्न करेंगे। न्याय में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा स्वयं भी निश्छल रूप से समाज में अपनी न्यायप्रियता का सिक्का जमाएंगे। आपकी इस निश्पक्षता को देखकर अन्य जन आपको अपने विवादों को सुलझाने के लिए आपको मध्यस्थ या पंच बनने की प्रार्थना करेंगे। आप अपनी इस जिम्मेदारी का भली भाँति निर्वाह करेंगे। आपकी सन्तति अल्प ही रहेगी एवं भाग्योदय भी विलम्ब से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः कयविकयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आपका शारीरिक कद मध्यम रहेगा। सरकार के उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग को प्रसन्न करने में आप निपुण रहेंगे तथा उनसे पूर्ण आदर एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। यदा कदा आप अनावश्यक रूप से अधिक बोलेंगे जिससे आपके प्रभाव में कमी आएगी। आप ज्योतिष अथवा ग्रहनक्षत्रादि शास्त्र में पारंगत रहेंगे तथा बन्धु एवं सेवक वर्ग से हार्दिक स्नेह का भाव रखेंगे।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।
अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

जीवन में आप कभी कभी अनुचित समय में अपने क्रोध का प्रदर्शन करेंगे अतः बाद में इसके लिए आपको दुःख उठाना पड़ेगा। आपकी वाणी अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरता से पूर्ण रहेगी। दीन दुखियों के प्रति आपके मन में दया एवं करूणा की भावना सर्वथा व्याप्त रहेगी। आपके नेत्र भी चंचलता से युक्त रहेंगे। आपकी आर्थिक स्थिति सामान्यतया विषम रहेगी कभी अत्याधिक मात्रा में धनागम होगा तो कभी अत्यल्प मात्रा में। आप स्वयं को घर के अन्दर बलवान तथा घर से बाहर कमजोर अनुभव करेंगे। मित्रों के मध्य आप हमेशा उनके प्रिय रहेंगे। आप देश से बाहर विदेश में निवास कर सकेंगे। साथ ही बन्धुवर्ग के आप हमेशा उपकारी रहेंगे।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येऌति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

आप जीवन में नाना प्रकार के वाहनों से युक्त रहेंगे। साथ ही आपके हृदय में दानशीलता की भावना भी विद्यमान रहेगी जिसका आप समयानुसार प्रदर्शन करते रहेंगे। स्त्री के आप आजीवन वश में रहकर धनवैभव से सुसम्पन्न रहकर उसका उपभोग करेंगे।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

देव गण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय रहेगी जो श्रोता को प्रिय लगेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही निर्मल एवं सरल रहेगी। अपनी बातों को सरलता पूर्वक प्रकट करना तथा दूसरे के विचारों को भी सुगमतापूर्वक ग्रहण करना आपकी विशेषता रहेगी। आपको थोड़ी मात्रा में शुद्ध एवं सात्विक भोजन करना अत्यन्त ही रूचिकर प्रतीत होगा। अन्य जनो के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा एवं स्वयं भी श्रेष्ठ विद्वानों द्वारा प्रतिपादित आदर्श गुणों से सुसम्पन्न रहेंगे। इसके साथ ही नानाप्रकार के सुखैश्वर्य एवं धनधान्य का भी आप सुखपूर्वक उपभोग करने में सफल रहेंगे।

देखने में आपका रूप सौन्दर्य से युक्त रहेगा। आपके मन में दानशीलता की भावना भी सर्वथा विद्यमान रहेगी तथा समयानुकार दीन दुःखियों तथा जरूरत मन्द को आप दान देते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा हमेशा सादगी से युक्त रहेंगे। साथ ही समाज में आप एक आदर तथा सम्मानीय विद्वान होंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

महिष योनि में पैदा होने के कारण आप वाद विवाद तथा झगड़े इत्यादि में अधिकाँश विजय ही प्राप्त करेंगे तथा स्वयं भी साहसीयोद्धा होंगे तथा साहसिक कार्यो को करने के लिए हमेशा उद्यत रहेंगे। आपकी सन्तति अधिक रहेगी। आपकी प्रकृति वायु प्रधान होगी अतः जीवन में यदा कदा वायु रोगों से भी पीड़ित रहना पडेगा। आपकी बुद्धि में तीक्ष्णता का अभाव रहेगा तथा मध्यम बुद्धि से ही आप के अधिकाँश कार्यकलाप सफल होंगे।

संग्रामे विजयी योद्धा सकामस्तु बहुप्रजः।
वाताधिको मन्दमतिर्नरो महिषयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात् महिष योनि में उत्पन्न जातक युद्ध के मैदान में विजय प्राप्त करने वाला, योद्धा, कामाग्नि से प्रबल, अधिक संतति वाला, वायु प्रधान प्रवृति तथा धर्म के प्रति निष्ठावान रहता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा दशम भाव में स्थित है। अतः आप माता के प्रिय रहेंगे उनका शारीरिक स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घायु होगी। विभिन्न प्रकार की धन सम्पत्ति तथा सुखसंसाधनों से वे युक्त रहेंगी एवं आपको जीवन में उन सभी सुखों से परिपूर्ण करने के लिए यत्नशील रहेंगी। उनके सहयोग से ही आप जीवन में नौकरी, व्यापार तथा यश को प्राप्त करने में सफल हो सकेंगे।

आप भी उनके प्रति श्रद्धावान रहेंगे एवं एक आज्ञाकारी पुत्र की तरह उनकी आज्ञा का पूर्ण रूप से अनुपालन करेंगे। जीवन में उनकी सेवा सुविधा का आप पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा यत्नपूर्वक उनको वांछित आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग करते रहेंगे। आपके संबंध भी अच्छे रहेंगे एवं विचारों में विभिन्नता अल्प मात्रा में ही रहेगी। इस प्रकार एक दूसरे के लिए आप सामान्यतया शुभ ही रहेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है अतः आपके पिता का शारीरिक स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह का भाव रहेगा। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त ही रहेंगे एवं जीवन में शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको नित्य अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। दानशीलता की प्रवृति से वे युक्त रहेंगे एवं आपको भी पुण्य कार्यों को करने की नित्य प्रेरणा प्रदान करते रहेंगे।

आप का भी उनके प्रति मन में पूर्ण आदर का भाव रहेगा एवं समयानुसार उनकी आज्ञा का आप अनुपालन करते रहेंगे। आपके आपसी संबंध अच्छे होंगे परन्तु बीच बीच में कभी सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनाव या कटुता आएगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त स्वतः ही ठीक हो जाएगा। साथ ही आजीवन में हमेशा उनके सहयोग एवं सहायता के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे एवं उन्हे किसी भी प्रकार के कष्ट नहीं होने देंगे तथा समयानुसार आर्थिक या अन्य प्रकार की वांछित सहयोग भी प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में मंगल की स्थिति द्वादश भाव में विद्यमान है अतः भाई बहिनों से आप सामान्य स्नेह तथा सम्मान प्राप्त करेंगे। उनका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक रूप से अस्वस्थता भी उनमें विद्यमान रहेगी। धन सम्पत्ति से वे प्रायः युक्त रहेंगे तथा जीवन में आपको वांछित आर्थिक तथा अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त सुख दुःख में भी आपको उन्से पूर्ण सहानुभूति तथा सहायता प्राप्त होगी।

आपके मन में भी उनके प्रति सम्मान एवं स्नेह की भावना रहेगी एवं यथाशक्ति जीवन में उनको अपनी ओर से आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे परन्तु यदा कदा मतभेदों के कारण तनाव की स्थिति भी उत्पन्न होगी परन्तु कुछ समय के बाद सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी तथा चतुर्दशी तिथियाँ, शतभिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल देने वाले होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतभिषा नक्षत्र शुक्ल योग तथा तैतिलकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, कयविकयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। इसके साथ ही गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यो में वर्जित रखें। इन दिनो तथा समय में आपको अपने स्वास्थ्य के प्रति भी सावधान रहना पड़ेगा।

यदि आपके लिए समय प्रतिकूल चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति प्राप्ति में बाधा तथा अन्य कार्यो में रूकावटें उत्पन्न हो रही हों तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देवी लक्ष्मी की उपासना करनी चाहिए तथा शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, हीरा, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, दूध आदि पदार्थों का दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अशुभ फलों में भी न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ऊँ ह्रीं श्रीं शुक्राय नमः।

Acharya Ashok Shukla Vedpathi   Shiva Shiv Astrology Research Centre
Brahmavidyapeeth Shukatirtha
9897180017
ashok.shukla.mzn@gmail.com